विज्ञान ज्योतिष को विज्ञान क्यों नहीं मानता

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंततः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान ज्योतिष को विज्ञान इसलिए नहीं मानता क्योंकि इसमें प्रायोगिक प्रमाण और पुनरावृत्ति की क्षमता नहीं है। विज्ञान सत्यापन और पुनरावृत्ति चाहता है, जबकि ज्योतिष विश्वास और सांस्कृतिक मान्यता पर आधारित है। ज्योतिष समाज को मानसिक सहारा, सांत्वना और मार्गदर्शन अवश्य देता है, लेकिन वैज्ञानिक स्तर पर इसे कूटविज्ञान या छद्मविज्ञान की श्रेणी में रखा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ज्योतिष का महत्त्व कम है, बल्कि यह कि विज्ञान और ज्योतिष दो भिन्न पथ हैं—एक प्रमाण और प्रयोग का, दूसरा आस्था और परंपरा का।

मानव सभ्यता के इतिहास में ज्योतिष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है. वैदिक काल से लेकर प्राचीन यूनानी, मिस्री, चीनी और बेबीलोनियन परंपराओं तक ज्योतिष को ब्रह्मांडीय व्यवस्था और मानवीय जीवन के बीच एक अद्भुत सेतु के रूप में देखा गया. मनुष्य ने जब से आकाश की ओर देखा है, तभी से यह जिज्ञासा बनी रही है कि ग्रह-नक्षत्र केवल आकाशीय पिंड हैं या फिर उनका जीवन की दिशा और निर्णयों से भी कोई गहरा संबंध है. भारतीय परंपरा में तो इसे वेदांग माना गया और आचार्य वराहमिहिर, आर्यभट, भास्कराचार्य आदि ने इसे गणित और खगोल ज्ञान के साथ जोड़ा. इसी प्रकार पश्चिम में टॉलेमी, केप्लर और गैलीलियो जैसे विद्वानों ने भी ग्रहों की गति को समझने और उनसे निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया. परंतु आधुनिक विज्ञान, जो तर्क, प्रमाण और प्रयोग पर आधारित है, ज्योतिष को विज्ञान की श्रेणी में स्वीकार करने से इंकार करता है. प्रश्न यह उठता है कि आखिर क्यों विज्ञान, जो निरंतर नये-नये रहस्यों को उजागर करता आया है, वह ज्योतिष को विज्ञान नहीं मानता? इस प्रश्न का उत्तर कई स्तरों पर खोजा जा सकता है.

सबसे पहले विज्ञान और ज्योतिष के मूल स्वरूप में अंतर समझना आवश्यक है. विज्ञान का आधार है पर्यवेक्षण, प्रयोग और पुनरावृत्ति. कोई भी सिद्धांत तभी वैज्ञानिक माना जाता है जब वह नियंत्रित परिस्थितियों में बार-बार परीक्षण करने पर समान परिणाम दे. जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम हर जगह और हर समय समान रूप से लागू होता है. इसके विपरीत ज्योतिष की भविष्यवाणियाँ हर बार समान नहीं होतीं. दो ज्योतिषाचार्य एक ही जन्मकुंडली को देखकर अलग-अलग निष्कर्ष निकाल सकते हैं और परिणामों की यह असमानता वैज्ञानिक कसौटी पर इसे कमजोर बना देती है.

दूसरा बिंदु कारण और परिणाम के संबंध से जुड़ा हुआ है. विज्ञान हर घटना में कारण और परिणाम का स्पष्ट रिश्ता ढूँढता है. उदाहरण के लिए, धातु को गर्म करने पर उसका फैलना एक सार्वभौमिक नियम है. परंतु ज्योतिष यह कहता है कि ग्रहों की स्थिति या नक्षत्रों की चाल मानव के व्यक्तित्व, भाग्य, विवाह या मृत्यु तक को प्रभावित करती है. विज्ञान पूछता है कि इन दोनों के बीच कारण और परिणाम का वैज्ञानिक सूत्र क्या है? ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति इतनी दूर से किसी नवजात शिशु के स्वभाव को कैसे बदल सकती है? जब प्रसव कक्ष में उपस्थित नर्स का गुरुत्वाकर्षण बल भी शिशु पर प्लूटो ग्रह की तुलना में कहीं अधिक होता है, तो फिर यह कैसे माना जाए कि दूरस्थ ग्रह शिशु के जीवन की दिशा निर्धारित करेंगे? इस प्रश्न का आज तक कोई ठोस उत्तर ज्योतिष नहीं दे पाया है.

तीसरा अंतर खगोलशास्त्र और ज्योतिष में है. खगोलशास्त्र यानी एस्ट्रोनॉमी वास्तविक विज्ञान है, जिसमें आकाशीय पिंडों की गति, स्थिति और भौतिक गुणों का अध्ययन होता है. यह गणितीय समीकरणों और भौतिक नियमों पर आधारित है. दूसरी ओर ज्योतिष यानी एस्ट्रोलॉजी इन खगोलीय गणनाओं से जीवन के घटनाक्रम का पूर्वानुमान करने की कोशिश करता है. खगोलशास्त्र को विज्ञान का दर्जा मिला क्योंकि उसके सिद्धांत बार-बार परीक्षण में सही सिद्ध हुए, पर ज्योतिष की भविष्यवाणियों को प्रयोगों में बार-बार प्रमाणित नहीं किया जा सका.

चौथा पहलू वैज्ञानिक परीक्षणों का है. बीसवीं शताब्दी में अमेरिका और यूरोप में बड़े पैमाने पर परीक्षण हुए. हजारों कुंडलियों का अध्ययन कर यह देखा गया कि ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ कितनी सच साबित होती हैं. परिणाम यह रहा कि ज्योतिषियों के कथन संयोग या सामान्य अनुमान से अधिक विश्वसनीय नहीं थे. भारत में भी विश्वविद्यालयों में ज्योतिष को अकादमिक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया गया, परंतु जब इसकी वैज्ञानिक जांच हुई तो परिणाम एकरूप और निश्चित नहीं निकले.

विज्ञान का एक अन्य तर्क यह है कि ज्योतिष का प्रभाव वास्तव में सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक अधिक है. मनुष्य स्वभाव से ही अनिश्चितताओं से डरता है और भविष्य को जानना चाहता है. ज्योतिष इस भय और जिज्ञासा का समाधान देता है. जब किसी को ज्योतिष से सकारात्मक भविष्यवाणी मिलती है तो वह उसे याद रखता है, और यदि भविष्यवाणी असत्य साबित हो तो उसे अनदेखा कर देता है. इसे ही मनोविज्ञान में पुष्टिकरण पूर्वाग्रह कहा जाता है. इसी तरह बार्नम प्रभाव भी काम करता है, जिसमें सामान्य और अस्पष्ट कथनों को लोग अपने जीवन से जोड़ लेते हैं. इस प्रकार ज्योतिष लोगों को मानसिक सहारा और आत्मविश्वास तो देता है, परंतु यह वैज्ञानिक परीक्षण में सफल नहीं होता.

भारतीय परंपरा में ज्योतिष का स्थान केवल भविष्यवाणी तक सीमित नहीं रहा. विवाह, गृहप्रवेश, यज्ञ, पर्व, यात्रा और संस्कार जैसे अवसरों पर शुभ मुहूर्त निकालना आज भी व्यापक है. यहां ज्योतिष केवल विज्ञान नहीं, बल्कि आस्था और परंपरा का हिस्सा है. यही कारण है कि भारत सरकार ने 2001 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अंतर्गत 'वैदिक ज्योतिष' को उच्च शिक्षा का विषय घोषित किया. इस निर्णय ने देशभर में बहस छेड़ दी. वैज्ञानिकों ने इसे विज्ञान का अपमान बताया, वहीं परंपरावादियों ने इसे भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान कहा. यह विवाद स्पष्ट करता है कि ज्योतिष का स्थान आस्था और परंपरा में तो निर्विवाद है, पर विज्ञान के क्षेत्र में इसे मान्यता नहीं मिल पाई है.

राशिफल

दिनांक- 31 अगस्त से 06 सितम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल कन्या राशि में, बुध सिंह राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृश्चिक धनु मकर और कुम्भ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:-ता. 3 मंगल चित्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से बाजारों में तेजी का उछाल आयेगा, गेहूं, चना, जौ, रूई, सूत, सोना चांदी में तेजी का झटका लगेगा, गुड़, खाड़, शक्कर आदि पदार्थों में मंदी रहेगी. उश्ररप्रदेश, मंध्यप्रदेश, छश्रीसगढ़, राजस्थान में बादल चाल कहीं अधिक वर्षा तो कहीं हल्की वारिश का योग बनेगा, कहीं कहीं सूखे की स्थिति भी देखने को मिलेगी, खेती किसानी मे कीट पतंगों का प्रकोप बढ़ेगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	31 अगस्त को	श्रीराधा अष्टमी, दुर्वाष्टमी
मंगलवार	02 सितम्बर को	दशावतार व्रत
बुधवार	03 सितम्बर को	पद्मा एकादशी व्रत, डोल ग्यारस, जल झूलनी एकादशी
गुरूवार	04 सितम्बर को	श्रवण द्वादशी, वामन जयंती, वामन प्रकटोत्सव
शुक्रवार	05 सितम्बर को	प्रदोष व्रत
शनिवार	06 सितम्बर को	गणेश विसर्जन, अनंत चतुर्दशी व्रत,

मेष

इस सप्ताह आपको नई नौकरी मिल सकती है, व्यापार के सिलसिले में सार्थक यात्रा का योग बन रहा है, आपके करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, उन पर धन व्यय होगा,बिखरे कार्य समेटने का प्रयास करेंगे, संपत्ति के कार्यो में खर्चहोगा, जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा.

वृषभ

इस सप्ताह आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़सकता है, कड़ीमेहनत करने पर ही सफ्लता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे,पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा, व्यवसायिक यात्रा में सावधानी रखें, उठाईगीरों से नुकसान हो सकता है.

मिथुन

इस सप्ताह प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत और मेहनत आपको भरपूर लाभ देगा. आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जमिथुन जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवादसे दूर रहें. अटके हुये कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छेपरिणाम मिलेंगे.

कर्क

इस सप्ताह आप खुशी के समाचार सुनेंगे. परिवार की सुख सुविधाओं पर ध्यान दें. आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा, सप्ताहान्त के अंत में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीवतों को खड़ी कर सकते हैं, जिसका शुभ एवं शीघ्र समाधान प्राप्त होगा, कामकाजी महिला को परेशानी हो सकती है.

सिंह

इस सप्ताह आपकी महत्वाकांक्षा चरम सीमा पर रहेगी, अपनी बुद्धिमानी इच्छायशक्ति के लिजये आपको भाग्य पर निर्भर रहना पड़ेगा. अपना विवेक कार्य में लगायें, आप भविष्य की योजना बनायेंगे. महिला जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय. रोगी के कार्यो में खर्च होगा.

कन्या

इस सप्ताह आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे, आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा, दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी, नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि भवन प्रापर्टी में खर्च होगा, नये कार्यो पर विचार विमर्श होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

तुला

इस सप्ताह आपकी जानपहचान और परिचित का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, आप भविष्य की योजनाओं को बना सकते हैं. पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं, आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर की यात्रा कर सकते हैं. आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

वृश्चिक

इस सप्ताह हंसी खुशी का वातावरण रहेगा, आपकी आंतरिक उर्जा चरम सीमा पर रहेगी, आप जीवन सुखमयपूर्वक व्यतीत करेंगे, आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है,पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा. कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी, जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाल में ले जा सकते हैं.

धनु

यह सप्ताह इच्छा कामना और आकांक्षाओं का रहेगा, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे, कई उतार चढ़ाव आयेंगे, व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति रहेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

मकर

इस सप्ताह आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते हैं, जमीन जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा, अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

कुम्भ

इस सप्ताह आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफ्ल रहेंगे, कार्यक्षेत्र मेंआप क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे, आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी. आप जिस पर भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

मीन

इस सप्ताह स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनेदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं कोपरेशानी होगी. साझेदारी मेंसंदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है, सावधानी बांछनीय, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

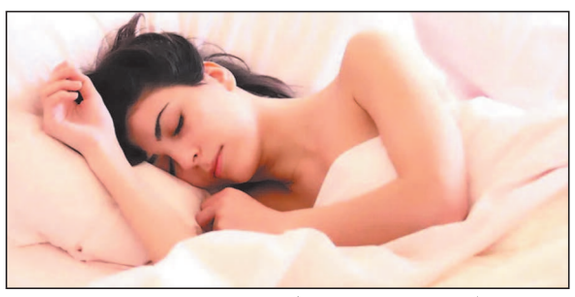

धनवान बनने का संकेत देते हैं ये शुभ सपने

हर व्यक्ति धन और सुख-सुविधाओं की कामना करता है. कई बार जीवन में अचानक धन-संपदा का आगमन होता है, और हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, इसका संकेत हमें कुछ विशेष सपनों से मिल सकता है. स्वप्न शास्त्र और भविष्य पुराण में ऐसे कई संकेतों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें अगर सही समय पर पहचान लिया जाए तो ये आने वाले अच्छे समय और आर्थिक समृद्धि की ओर इशारा करते हैं.

धार्मिक और खगोलीय सपने-यदि आप सपने में मंदिर, सूर्य, चंद्रमा या ध्वज देखते हैं, तो यह सुख-सुविधाओं की प्राप्ति और धन की कमी दूर होने का संकेत है. इसी तरह, तारे, सूर्य, चंद्रमा या पर्वत देखना भी धन-संपत्ति के आगमन का प्रतीक माना जाता है.

प्रगति और सफलता के संकेत- यदि कोई व्यक्ति सपने में खुद को वृक्ष या पौधे लगाते हुए देखता है, तो यह जल्द ही उच्च पद और करियर में तरक्की मिलने का संकेत है. इसी तरह, खुद को साहस के साथ नदी पार करते हुए देखना बड़ा आर्थिक लाभ और जीवन में प्रगति को दर्शाता है.

देवी लक्ष्मी का संकेत- यदि आप सपने में खुद को अनेक सिर और भुजाओं वाला देखते हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि आपके घर में देवी लक्ष्मी का प्रवेश होने वाला है, जिससे करियर और पारिवारिक जीवन में सुधार होता है.

ऐश्वर्य और वैभव का प्रतीक-सपने में सोने या चांदी के पात्र में खीर खाते हुए देखना ऐश्वर्य और वैभव की प्राप्ति का संकेत है. भले ही वास्तविक जीवन में मदिरा का सेवन शुभ न माना जाता हो, लेकिन स्वप्न में इसे देखना भी आर्थिक लाभ और समृद्धि का प्रतीक माना गया है.

राधा अष्टमी पर घर लाएं ये तीन शुभ वस्तुएं

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, जिसे राधा अष्टमी के रूप में मनाया जाता है, इस वर्ष 31 अगस्त, रविवार को पड़ रही है. यह दिन राधा रानी के जन्मोत्सव के रूप में विशेष रूप से पूजनीय है. ऐसी मान्यता है कि राधा जी की पूजा करने से वैवाहिक जीवन में प्रेम और सौभाग्य की वृद्धि होती है.

इस बार राधा अष्टमी पर पूजा का शुभ समय 31 अगस्त की सुबह 11:05 बजे से दोपहर 1:38 बजे तक रहेगा. धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, इस दिन श्रीकृष्ण से जुड़ी कुछ पवित्र वस्तुएँ घर लाना अत्यंत शुभ माना जाता है. ये वस्तुएँ घर में सकारात्मकता और सुख-समृद्धि लाती हैं.

बाँसुरी- भगवान कृष्ण की बाँसुरी की धुन राधा जी को बहुत प्रिय थी. राधा अष्टमी

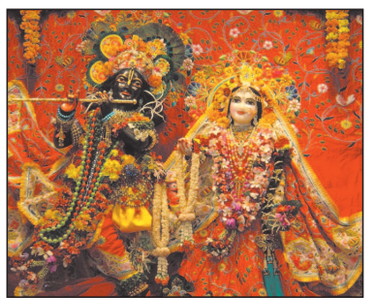

पर घर में बाँसुरी लाना एक पुरानी परंपरा है. इसे घर में किसी पवित्र स्थान पर रखने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और परिवार में सामंजस्य बना रहता है.

कदंब का पौधा- पौराणिक कथाओं के अनुसार, कृष्ण अक्सर कदंब के पेड़ की शाखाओं पर बैठकर बाँसुरी बजाया करते थे. इस कारण राधा अष्टमी के दिन कदंब का पौधा लाना बहुत शुभ माना जाता है. इसे घर के आँगन या बालकनी में लगाने से सुख और समृद्धि आती है.

मोरपंख- भगवान कृष्ण के मुकुट का सबसे प्रमुख श्रृंगार मोरपंख है. यह आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. राधा जी को भी मोरपंख बहुत प्रिय है. इसलिए राधा अष्टमी पर मोरपंख घर लाने से परिवार पर राधा-कृष्ण की विशेष कृपा बनी रहती है.

यह पर्व राधा-कृष्ण के अटूट प्रेम और भक्ति का प्रतीक है, और इन वस्तुओं को घर में लाकर भक्त उनके आशीर्वाद की कामना करते हैं.

घर के आसपास दिखते हैं ये संकेत तो समझिए चमकने वाली है किस्मत

वास्तु शास्त्र में ऐसी कई घटनाओं और संकेतों का जिक्र किया गया है, जिन्हें अत्यंत शुभ माना जाता है. यदि ये संकेत हमारे आसपास दिखाई दें, तो इन्हें अनदेखा नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये जीवन में आने वाले अच्छे बदलावों और आर्थिक समृद्धि का इशारा हो सकते हैं.

वास्तु के जानकारों के अनुसार, सुबह के समय मंदिर की घंटियों या शंख की आवाज सुनाई देना एक बहुत ही शुभ संकेत है. इसके अलावा, यदि आपके घर में अचानक से किसी अच्छी सुगंध का अनुभव हो, तो इसे भी एक सकारात्मक संकेत माना जाता है. इसका अर्थ है कि आप जिस काम के लिए प्रयास कर रहे हैं, वह जल्द ही पूरा हो सकता है.

पक्षियों का दिखना है खास- कुछ पक्षियों का दिखना भी वास्तु शास्त्र में विशेष महत्व रखता है. यदि आपको अपने आसपास तोता या उल्लू दिखाई दे, तो इसे धन लाभ और खुशखबरी का संकेत माना जाता है. ये पक्षी जीवन में आने वाली सकारात्मकता और सुख-समृद्धि का प्रतीक होते हैं.

चिड़िया का घोंसला- अगर कोई चिड़िया आपके घर में घोंसला बना लेती है, तो इसे भी एक अत्यंत शुभ संकेत माना जाता है. यह इस बात का प्रतीक है कि आपके जीवन में जल्द ही खुशियाँ आने वाली हैं. यह भी माना जाता है कि चिड़िया का घोंसला बनाना आपके ऊपर आने वाली किसी बड़ी बाधा या परेशानी के टल जाने का संकेत देता है.

घर से निकलते समय के संकेत- किसी महत्वपूर्ण काम के लिए घर से निकलते समय कुछ घटनाओं को शुभ माना जाता है. यदि आपको कोई गाय या बछड़ा गाय का दूध पीते हुए दिखाई दे, तो यह आपके कार्य की सफलता का संकेत है.

इस वर्ष पितृपक्ष में चंद्रग्रहण का विशेष संयोग

7 सितंबर से शुरू होकर 21 सितंबर तक चलेगा पितृपक्ष, तिथि व्यवस्था के कारण एक दिन होंगे दो श्राद्ध

इस वर्ष पितृपक्ष की शुरुआत एक दुर्लभ खगोलीय घटना के साथ हो रही है. 7 सितंबर की रात को खग्रास चंद्रग्रहण लगेगा, जो रात 9:52 बजे से शुरू होकर 1:27 बजे तक चलेगा.

पितरों की आत्मा की शांति और श्रद्धा के लिए समर्पित पितृपक्ष, इस वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा यानी 7 सितंबर से शुरू होगा. यह पक्ष आश्विन अमावस्या, 21 सितंबर को समाप्त होगा. इस दौरान पूर्वजों के लिए तर्पण और श्राद्ध कर्म किए जाएंगे.

इस वर्ष पितृपक्ष की शुरुआत एक दुर्लभ खगोलीय घटना के साथ हो रही है. 7 सितंबर की रात को खग्रास चंद्रग्रहण लगेगा, जो रात 9:52 बजे से शुरू होकर 1:27 बजे तक चलेगा. चूंकि चंद्रग्रहण की समाप्ति के बाद ही आश्विन कृष्ण प्रतिपदा तिथि का आरंभ होगा, इसलिए प्रतिपदा का श्राद्ध 8 सितंबर को किया जाएगा.

इस बार तिथियों के विशेष संयोग के चलते पंचमी और षष्ठी तिथि का श्राद्ध एक ही दिन, यानी 12 सितंबर को संपन्न होगा. ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार, 12 सितंबर को दोपहर 1:20 बजे तक पंचमी तिथि है, जिसके बाद षष्ठी तिथि आरंभ हो जाएगी. शास्त्रों में श्राद्ध कर्म का उपयुक्त समय दोपहर 12 बजे से 2 बजे के बीच माना गया है, और इसी अवधि में दोनों तिथियों का समावेश होने के कारण यह निर्णय लिया गया है.

पितृपक्ष का यह पावन काल 21 सितंबर को पितृ विसर्जन के साथ समाप्त होगा. इसके अगले दिन से ही मां दुर्गा की आराधना का महापर्व शारदीय नवरात्रि आरंभ हो जाएगा. यह विशेष संयोग धार्मिक और खगोलीय दोनों ही दृष्टियों से उल्लेखनीय है.

तुलसी का पौधा सुख-समृद्धि का प्रतीक

भारतीय संस्कृति में तुलसी के पौधे को एक विशेष और पवित्र स्थान दिया गया है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, तुलसी को देवी लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, जो घर में सकारात्मक ऊर्जा, सुख-शांति और समृद्धि लाती हैं. ज्योतिष के अनुसार, जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, वहां देवी लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है और दरिद्रता दूर होती है.तुलसी सिर्फ धार्मिक ही नहीं, बल्कि ज्योतिष और वास्तु की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है. यह नकारात्मक ऊर्जा को हटाकर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है. धार्मिक महत्व के साथ-साथ, तुलसी के औषधीय गुण भी हैं जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं.

इस पवित्र पौधे से जुड़े कुछ प्रभावशाली उपाय भी बताए गए हैं, जिन्हें अपनाने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं. इनमें शुक्रवार को तुलसी की 11 पत्तियां तोड़कर आटे के डिब्बे में रखना, पत्तियों को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी या पर्स में रखना, और गुरुवार को विष्णु भगवान को तुलसी अर्पित कर पीले कपड़े में बांधकर अलमारी में रखना शामिल है.कुल मिलाकर, तुलसी का पौधा सिर्फ आस्था का केंद्र नहीं है, बल्कि एक सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत भी माना गया है, जिसके उपाय सरल और प्रभावी माने जाते हैं.